the use of it we have no further information.

Mr. Deputy-Speaker: That is all. Shri Bade to continue his speech on the previous Resolution.

Shri Warior: Sir, I want to ask one question.

Mr. Deputy-Speaker: No. I have given enough opportunities to all the parties.

Shri Warior: The International Control Commission is there. Government can get the information. I want to ask a question on that.

Mr. Deputy-Speaker: No. Shri Bade.

16.30 hrs.

RESOLUTION *RE*: SESSION OF AT BANGALORE OR HYDERABAD PARLIAMENT—*contd.*

श्री बड़े (खारगोन) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय प्रकाशवीर शास्त्री का जो प्रस्ताव है उस का मैं समर्थन करता हूं । समर्थन मैं इसलिये करता हूं कि मैं ने पहले भी देखा है कि जब मध्य भारत में ग्वालियर और होलकर स्टेट एक हो गईं तो दोनों के इंटेग्रेशन के लिये ग्वालियर में भी विधान सभा होती थी और इन्दौर में भी विधान सभा होती थी । वैसे ही हाई कोर्ट के सम्बन्ध में भी है । एक हाई कोर्ट जबलपुर में है, दूसरा हाई कोर्ट इन्दौर में है, और तीसरे हाई कोर्ट की बैंच ग्वालियर में है । यही प्रिंसिपल उत्तर प्रदेश में भी फालो किया गया है । इस लिये प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने प्रस्ताव के समर्थन में जो मुद्दे दिये हैं, जो आर्गूमेंट्स दिये हैं, वे बहुत ठोस हैं ।

वस्तुतः बंगलौर में जो विधान सौध नाम का विधान सभा भवन है वह इस हाउस के बराबर है, और देखने में इस से भी अच्छा है । वहां जो एम० एल० ए० क्वार्टर्स हैं उन में 500 मेम्बर्स आसानी से रह सकते हैं । यह कहना गलत होगा कि चूंकि वहां पर जगह नहीं है इस वास्ते दक्षिण भारत में बंगलौर में या हैदराबाद में लोक सभा का अधिवेशन नहीं हो सकता ।

वास्तविकता यह है कि दिल्ली में मद्रासी लोगों के आ जाने से हमारा और मद्रासियों का एक जगह पर खाना पीना होता है । उन की इडली दोसा हम खाते हैं और हमारी रोटी दाल वे खाते हैं और दोनों बड़े मेल से रहते हैं । भोजन को लेकर एक जगह लिखा हुआ है : "अन्नं ब्रह्म" । इस तरह से इडली दोसा और रोटी दाल दोनों का सम्मिलन हो जाता है ।

मैं जब मद्रास गया और मद्रास स्टेशन के लोगों ने देखा कि मैं हिन्दुस्तानी हूं तो उनका व्यवहार मेरे साथ बड़े प्रेम का हुआ । इसलिये मैं समझता हूं कि यदि हैदराबाद अथवा बंगलौर में पार्लियामेंट की एक बैठक हो तो इस से बड़ा लाभ होगा । मैं नहीं कहता कि वहां पर बजट अधिवेशन हो । क्योंकि इस में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन के लिये सेक्रेटेरियट से माहिती या इन्फार्मेशन आने की जरूरत होती है । अगर बजट अधिवेशन के बजाय कोई दूसरा अधिवेशन किया जाये तो ज्यादा अच्छा होगा और खर्च भी ज्यादा नहीं होगा ।

एक दूसरा पहलु भी है कि वहां खर्च ज्यादा लगेगा । श्री शास्त्री ने कहा था कि मद्रास के लोगों को यहां आने में जो खर्च पड़ता है, उतना ही खर्च बम्बई के लोगों को यहां आने में पड़ता है । लेकिन बम्बई के आदमियों के लिये बंगलौर नजदीक पड़ेगा । हमारे वास्ते बंगलौर ज्यादा लम्बा नहीं रहेगा । कलकत्ता के लोगों के लिये जैसे बंगलौर पड़ेगा वैसे ही दिल्ली । इस लिये मैं समझता हूं कि खर्च की दृष्टि से जो आपत्ति की जा रही है उस में कोई दम नहीं है । यह देश हमारा है लेकिन इस में अजीब अजीब तरह की कल्पनायें हैं । मदर्न इंडिया वाले कहते हैं कि व्हाट इज इंडिया आर भारत। भारत, वंट इज, उत्तर प्रदेश । वह उत्तर प्रदेश का इम्पीरियलिज्म अपने ऊपर समझते हैं । लेकिन वह गलत समझते हैं । इंडिया, वंट इज भारत, वंट इज उत्तर प्रदेश यह कहना

[श्री बड़े]

गलत है। हम को उन लोगों को यह बतलाना चाहिये कि हम तो तुम को वेदों को मानने वाला समझते हैं। मैं कहता हूं कि अगर सच्चा भारत देखना है तो जा कर दक्षिण देखो। जब मैं मद्रास गया था तो मैं ने वहां दक्षिण भारत के मन्दिर देखे। जब मैं ने वहां क संस्कृत का ज्ञान देखा तो मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि सच्चा भारत वहीं है। दिल्ली के आस पास मुसलमानों के आक्रमण के कारण उर्दू और मुस्लिम साहित्य ज्यादा रहा। यहां उन का मिश्रण हो गया है। लेकिन अगर-विशुद्ध भारत देखना हो तो हमारे साथ दक्षिण में आइये। वहां वेदों का पाठ होता है। वहीं से शंकराचार्य निकले हैं। तीनों आचार्य निकले हैं। अगर आप दक्षिण के मन्दिरों के चित्र देखेंगे तो वहां पर पुराणों के चित्र मिलेंगे। हमारे यशपाल सिंह जी ने कहा कि एक जगह से मन्दिर दूसरी जगह जाते हैं। मैं समझता हूं कि पंढ़रपुर में जो विठोवा का मन्दिर है वह खानदेश में है। वहां मन्दिर को उठा कर दूसरी जगह ले जाया गया है। भावना यह है कि सब जगह भगवान है। कण कण में भगवान है, कंकड़ कंकड़ में शंकर है। यह कहना ठीक नहीं है कि मथुरा जी में ही भगवान बैठते हैं। वह बैठते हैं भारत के हृदय में। अगर उत्तर प्रदेश के लोग मद्रास में जायें तो उन को मालूम पड़ेगा कि उन लोगों का हृदय कितना विशाल है। वह लोग दक्षिण भारत को, मध्य प्रदेश को और शेष भारत को एक साथ ले कर चलते हैं।

डिफेन्स की दृष्टि से दिल्ली सीमा के बहुत पास है। इसी वास्ते पहले भी ब्रिटिश टाइम में अंग्रेजों ने जबलपुर में आर्डनेंन्स फैक्टरी खोली थी ताकि अगर हमला हो तो दिल्ली में ही हो, जबलपुर में वह लोग नहीं जा सकेंगे।

मैं रघुनाथ सिंह जी से कहना चाहता हूं कि अगर वह यह कहें कि बंगलौर में पार्लियामेंट की बैठक नहीं होनी चाहिये तो यह एक संकुचित भावना होगी। मद्रासियों का कहना है कि आप के दिमाग में दिल्ली भरी पड़ी है। इस तरह से इस बात की पुष्टि हो जायेगी। उन लोगों को एसा नहीं मालूम पड़ना चाहिये।

कांग्रेस की दृष्टि से भी मैं यही कहना चाहूंगा। अभी लैंग्वेज प्राब्लेम को ले कर झगड़ा हो चुका है। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिये जिस से मालूम हो कि हम सब एक हैं। इस लिये अगर एक आध महीने के लिये पार्लियामेंट दक्षिण में ले जाई जाये तो कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

श्री रघुनाथ सिंह (वाराणसी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो यह कहना चाहता हूं कि दिल्ली कभी भी हिन्दुस्तान की राजधानी नहीं रही, और जब कभी हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली रही, हिन्दुस्तान का राज्य समाप्त हो गया। दिल्ली राज्य और साम्राज्यों का महाश्मशान भूमि है। हिन्दुस्तान की राजधानी होने का श्रेय केवल पाटलिपुत्र को प्राप्त था। वह 825 साल तक सारे भारतवर्ष की राजधानी रही। दिल्ली का इतिहास आरम्भ होता है चौहानों के काल से, और चौहान लोगों के समय में भी केवल 18 वर्ष तक दिल्ली राजधानी रही। अट्ठारह वर्ष बाद फर्स्ट बैटल आफ पानीपत हुई जिस में दिल्ली राजधानी समाप्त हो गई। उस के पश्चात् गौरी वंश आया। गौरी वंश सिर्फ ग्यारह वर्ष तक शासन कर सका। फिर गुलाम वंश आया। वह भी 84 वर्ष तक रहा। खिलजी वंश 30 वर्ष तक रहा। तुगलक वंश 78 वर्ष तक रहा। सैयद वंश 35 वर्ष तक रहा और शेर शाह सूरी ने 16 वर्ष तक शासन किया।

इस प्रकार से आप देखेंगे कि पहले पहल इस बात को किस ने समझा। बाबर जब यहां आया, मुगल लोग आये तो उन्हों ने इस बात को अनुभव किया कि दिल्ली में कोई

शासन व्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती। यहां कभी स्थिरता नहीं आ सकती। हिन्दुओं ने भी इस बात को सोचा था, अतएव उन्हों ने कभी भी दिल्ली को भारतवर्ष की राजधानी नहीं बनाया। चौहान ने गलती की और नतीजा यह हुआ कि 700 वर्ष बाद भारत पराधीन हो गया।

एक माननीय सदस्य : इंद्रप्रस्थ राजधानी रह चुकी है।

श्री रघुनाथ सिंह : जब इंद्रप्रस्थ में राजधानी बनी तो दिल्ली में सीधा कुरुक्षे हो गया जिस में सारे हिन्दुस्तान की तमाम शक्तियां तबाह हो गई। मैं चाहता हूं कि कोई इतिहास से प्रमाण दे दे कि दिल्ली कभी भी भारत की राजधानी रही है।

मुगल लोगों ने पहले इस को सोचा कि दिल्ली में कभी भी सुस्थिरता नहीं होगी और दिल्ली से हटना चाहिये। जब मुगल लोगों ने इब्राहीम लोदी को हराया तो उस के बाद उन्हों ने आगरे में राजधानी कायम किया। मुग़लों का शासन हिन्दुस्तान में 331 वर्ष तक रहा लेकिन आप देखेंगे कि इन 331 वर्षों में से करीब 131 वर्षों तक उन्होंने आगरा को अपनी राजधानी बनाया। शाह-जहां ने सन 1616 ई० में दिल्ली को अपनी राजधानी बनाने की कोशिश की। जब उसने दिल्ली में अपनी राजधानी स्थापित करने की कोशिश की तो ठीक दस वर्ष बाद वह आगरा के किले में बंद हो गया। उसके बाद औरंगजेब राजा बना। लेकिन शाहजहां के पश्चात राजा बनने पर भी औरंगजेब को यहां स्थिरता नहीं मिली। दक्षिण में लड़ते लड़ते वहीं पर दौलताबाद में औरंगजेब की कब्र बन गई। मुगलों के समय में भी औरंगजेब के पश्चात 150 वर्ष तक, अर्थात सन् 1857 तक जब कि यहां लास्ट मोगल किंग बहादुरशाह का राज्य रहा, आप देखेंगे कि यहां मराठे आये। वह भी समाप्त हुए। नादिरशाह आया, अहमदशाह अब्दाली आया। सब आते गये और इस महाश्मशान में अपनी चिता बनाते चले गये। इस प्रकार से दिल्ली कभी शोभनीय स्थान नहीं रहा है।

इसके बाद आप अंग्रेजों को देखिये। अंग्रेजों ने सन 1903 में लार्ड कर्जन के समय में पहला दिल्ली दरबार किया ठीक उसके 45 वर्ष बाद अंग्रेजों का राज्य यहां से खत्म हो गया। इस प्रकार आप देखेंगे कि दिल्ली ने किसी साम्राज्य को स्थिर नहीं रहने दिया।

हमारे भाई ने कहा कि दिल्ली का नाम देहली है। लेकिन उसका नाम देहल नहीं है। जब पृथ्वी राज ने अपना दुर्ग बनाने के लिये नींव डाली तो वह हिलने लगी। इसलिये इसका नाम हुआ ढीली और उससे दिल्ली हो गया। यहां जो भी शासन प्रणाली चलेगी वह सब ढीली चलेगी। कोई शासन प्रणाली स्थिर नहीं होगी।

इसके बाद मैं एक बात और कहना चाहता हूं। अंग्रेजों के समय में हिन्दुस्तान की दो राजधानियां थीं। एक राजधानी कलकत्ते में होती थी और समर कैपीटल दारजिलिंग में होता था। जब दिल्ली में अंग्रेज लोग अपनी राजधानी ले आए तो उन्हों ने समर कैपीटल शिमला रखा। वहां असेम्बली की बैठक होती थी। हम नहीं समझते कि हम भी अपना एक सेशन बंगलौर में, खास कर आज की परिस्थितियों में क्यों न करें। वहां की आब हवा भी अच्छी है। यह मेरा एक सुझाव है।

सरदार पटेल के समय में भी यह प्रश्न उठा था कि दिल्ली को हिंदुस्तान की राजधानी बनाया जाए, या नहीं, तो सरदार पटेल ने कहा था कि दिल्ली बहुत शुभ

[श्री रघुनाथ सिंह]

नहीं है, अच्छा होता यदि हिन्दुस्तान की राजधानी उज्जैन या भोपाल में होती। ऐसा विचार उस समय हिन्दुस्तानियों के दिमाग में आया था।

श्री सत्य नारायण सिंह तो बहुत धार्मिक पुरुष हैं। उन्होंने भविष्य पुराण भी पढ़ा होगा। वह बता दें कि कब तक दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी रही है। अगर रही है तो वे इसे राजधानी अवश्य बनाएं।

मैं समझता हूं कि देश की एकता की दृष्टि से और जो मतभेद पैदा हो जाते हैं उनको दूर करने की दृष्टि से दक्षिण भारत में संसद का एक अधिवेशन किया जाए तो बहुत अच्छा रहेगा। अंग्रेजों के समय में भी एक अधिवेशन शिमला में होता रहा था। इसलिए अगर हमारी संसद का भी एक अधिवेशन दक्षिण भारत में हो तो अनुचित न होगा।

Mr. Deputy-Speaker: Shri Narendra Singh Mahida. I am calling the Minister to reply at 5 O'Clock.

Shri Gauri Shankar Kakkar (Fatehpur): I want ten minutes.

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर): उपाध्यक्ष महोदय, समय बढ़ाया जाए।

श्री गौरी शंकर कक्कड़: आधा घंटा समय बढ़ा दिया जाए।

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास): यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसलिए इसके लिए आधा घंटा समय बढ़ाया जाए।

Shrimati Lakshmikanthamma (Khammam): The resolution is concerning Hyderabad and Bangalore. You have not allowed hon. Members from those places to speak.

Mr. Deputy-Speaker: Why should they speak? It is for the North to decide.

Shri Narendra Singh Mahida (Anand): I appreciate the object of Shri Prakash Vir Shastri in moving this resolution, but I am afraid I cannot agree with him. On the one side we are talking about economy, while on the other we say that we should have a session in the South as the British had at Simla. We are a poor country, and we cannot shift our capital even temporarily to our liking here and there.

Arguments have been given for holding a session in Bangalore or Hyderabad, but then the Western part of the country will say that a session should be held in Ahmedabad, the Eastern part will say that a session should be held in Calcutta, the Central part will say that a session should be held in Bhopal or Ujjain. From the point of view of climate, Kashmir will say that it is a paradise, and a session should be held there. I think it will create more problems.

We are already short of accommodation, short of finances, and we are in an emergency, and we cannot shift our session to our liking during this time of crisis.

We may talk in a lighter vein. Shri Raghunath Singh has mentioned about the history of Delhi, but he will not be able to find any capital in the world which has been sustained for all time, but in USA the capital remains at Washington, in UK it remains at London, and in West Germany it remains at Berlin. So, I do not think there is any necessity for shifting our capital from Delhi.

I therefore request Shri Shastri to withdraw his resolution.

श्री शिव नारायण (बांसी): उपाध्यक्ष महोदय, मैं ने बाबू रघुनाथ सिंह का भाषण सुना। मालूम होता है, उन्होंने इस प्रस्ताव को देखा नहीं है। उसमें राजधानी को बदलने का प्रश्न नहीं है।

मैं प्रकाशवीर शास्त्री जी की बड़ी इज्जत करता हूं, वह बड़े विद्वान हैं, मैं उनकी बड़ी प्रतिष्ठा करता हूं । लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि यह तुगलकी नीति कब से उनके मस्तिष्क में प्रवेश कर गयी । मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से हैदराबाद और फिर हैदराबाद से दिल्ली को बदली थी, और ऐसा करने में हजारों आदमी मरे थे । मैं शास्त्री जी से पूछता हूं कि उनकी यह नीति कब से हो गयी ।

जहां तक भारत की संस्कृति की एकता का प्रश्न है, भारत के सब लोग यहां एकत्र होते हैं । आज यहां रहते हुए भी हम देखते हैं कि सरकारी फाइलें गायब हो जाती हैं, तो जब हैदराबाद में अधिवेशन होगा तो फाइलें रास्ते में ही गायब हो जाएंगी । फिर कितना खर्च होगा । आज हम लोग इमरजेंसी में से गुजर रहे हैं । आज देश में डी० आई० आर० लागू है । हम जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा लेकर सरकार चला रहे हैं । राजधानी बदलना कोई गुड़िया का खेल नहीं है, यह कोई नागपंचमी का मेला नहीं कि चाहे जहां कर लिया, यह कोई नाटक मंडली नहीं है कि इसे चाहे जहां नचा लिया, पार्लियामेंट की एक मान मर्यादा होती है । संसार के और भी बड़े बड़े देश हैं जहां डिमाक्रेटिक सेटअप है, जैसे इंगलैंड है, अमरीका है । वहां कैपीटल एक ही जगह रहते हैं, बदलते नहीं हैं । प्रकाशवीर जी ने एक भी ऐसा किसी देश का उदाहरण नहीं दिया कि इंगलैंड में कैपीटल बदलता है, या अमरीका में बदलता है या जरमनी में बदलता है । कहीं नहीं बदलता ।

क्लाईमेट की बात कही जाती है । हमारे एक मित्र ने कहा कि दिल्ली में लू लगती है । हम तो किसान के बेटे हैं, मई में गांवों में घूमते हैं, चार दिन यहां रहते हैं तो चार दिन रघुनाथपुर में रहते हैं । और हमारे रघुनाथ सिंह जी तो पवित्र काशी नगरी के रहने वाले हैं, जो कि शिव जी के त्रिशूल पर रहती है । उन्होंने ऐसे पवित्र स्थान का सुझाव क्यों नहीं दिया । वह तो वहां पले हैं ।

मैं इतिहास का विद्यार्थी रहा हूं । मैं आपको बताता हूं कि दक्षिण नासूर हो गया था औरंगजेब के लिए और उसके वह जाने से मुगल एम्पायर समाप्त हो गया । तो मैं अपने मित्रों से निवेदन करता हूं कि हमको उस नासूर में फंसाने की कोशिश न कीजिए । मैं समझता हूं कि हमारे मित्र श्री प्रकाशवीर शास्त्री अपने प्रस्ताव को वापस ले लेंगे । राजधानी जहां है वहीं रहेगी । इस संसार में सबका समय होता है, जो आता है वह जाता है । न कोई सदा रहा है और न रहेगा । जो राजा होगा वह कुछ समय शासन करके जाएगा ।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

श्री गौरी शंकर कक्कड़ : मैं शास्त्री जी के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । मुझे एक चीज कहनी है । अभी हमारे मित्र रघुनाथ सिंह जी ने इतिहास के पन्ने पलटे । मालूम होता है कि उनके दिमाग में यह बात आ रही है कि जो राजा दिल्ली में आया उसका शासन नहीं रह सका । इस लिए मैं प्रकाशवीर शास्त्री को बधाई देता हूं कि उन्होंने शासक दल के शुभचिन्तक के रूप में यह राजधानी हटाने का प्रस्ताव रखा है ताकि शासक दल मजबूत रहे ।

जहां तक बंगलौर में अधिवेशन को बुलाने का सवाल है मैं नहीं जानता कि इसमें कितना खर्च होगा और इस में क्या क्या कठिनाइयां हैं । यशपाल सिंह जी ने कहा कि जहां तक मिनिस्टर फार पार्लियामेंटरी एफैयर्स का ताल्लुक है वह तो सत्य नारायण हैं, सर्वव्यापी हैं, चाहे दिल्ली में अधिवेशन हो या बंगलौर में हो, वह सभी जगह उपस्थित रह सकते हैं । उनके लिए कोई कठिनाई नहीं है ।

[श्री गौरीशंकर कक्कड़]

जहां तक भावनात्मक एकता का सवाल है उसके बारे में मेरा विचार है कि अगर हम बंगलौर में अपना एक अधिवेशन करेंगे तो हमको वहां के लोगों से मिलने का, उनके साथ में रहने का, उनके साथ विचारविनिमय करने का अवसर मिलेगा, तो वास्तविक रूप में हम में राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा होगी। और श्रीमन् मैं तो आपको भी बधाई देता हूं कि आपके राज्य का विधान सभा भवन इतना सुन्दर है कि उसमें हमारे सदन का अधिवेशन अच्छी तरह हो सकता है।

मैं इस के पक्ष में हूं कि बंगलौर में सदन एक अधिवेशन किया जाए, यह राष्ट्रीय एकता के लिए अच्छा होगा।

Shrimati Lakshmikanthamma: Mr. Deputy-Speaker, Sir, I support the Resolution of Shri Prakash Vir Shastri, and at the same time, I do not agree with Shri Raghunath Singh that Delhi is not an auspicious place. It has given us a stable government all these years and we could fight against evil and establish right. I am sure Delhi should be the capital, but what Shri Prakash Vir Shastri has asked is that one of the short sessions of Parliament should be held at Hyderabad. Recently, when the Prime Minister visited Hyderabad—on the 20th and 21st instant—the DCC President also, in his welcome address, has requested the Prime Minister to hold one of the sessions of Parliament at Hyderabad. I am sure this could be done; on behalf of the Government of Andhra Pradesh, I can assure the House that all the facilities will be given, and all the difficulties that have been mentioned in the previous speeches will be overcome and all facilities will be given.

There are a number of huge buildings of the Nizam's time. All these will be placed at the disposal of the Government either for accommodation of Ministers, or the Members of Parliament. I do not agree with the remarks by my hon. friend about the change-over from Delhi to Daulatabad and back. There was nothing wrong with Mohammed Bin Tughlak. He was ahead of his time and always so, and that was one of the reasons why he failed. One other reason was the communications were not developed then. Today, you sit here and within three hours you are at Hyderabad. Andhra Pradesh is one of the biggest States in the South, all the four southern States put together. I welcome the suggestion that one of the sessions can be held elsewhere in the South also. But at the same time, I am confident that Hyderabad can play the part of an integrating force between the South and the North. I am glad that in the southern States there is unity and they have always pledged for the unity of the country. The leadership in the South has always pledged for the unity of the country. They have stood together amongst themselves either in the river water dispute or any other thing. They stand together among themselves and they decide things. There is no disunity and this will help the cultural or linguistic unity of the nation as a whole.

Hyderabad will be able to give all the facilities for holding a session there. I may add that this is not a new idea of Shri Prakash Vir Shastri alone. Dr. Rajendra Prasad, as President, used to stay at Hyderabad for six months or so in a year. He was having the Rashtrapati Nilayam there. He used to stay there and proceed on tours from there to the other States in the South.

So, with these few words, I have pleasure in supporting the resolution.

Shri A. S. Alva (Mangalore): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I fully support the Resolution of my hon. friend Shri Prakash Vir Shastri.

An Hon. Member: Is he for Hyderabad or Bangalore?

Shri A. S. Alva: Of course, Bangalore. It is not a question of shifting the capital at all. Shri Raghunath Singh was not justified in saying that Delhi is not a suitable place to be the capital. What happened is, monarchy cannot survive in Delhi; but democracy can always survive. So, his example to show that Delhi cannot be the Capital, cannot be sustained.

My hon. friend has rightly said that if you have a session in the South, it will go a long way towards national integration, and the people in the North will be knowing better the people of the South. There is one further point which I wish to submit in this connection. There is a charge against high officers of the Secretariat of the Government of India that they are not willing to go out of Delhi and that they always want to remain in Delhi; and that will be a good reason why they should go to another place where the session may be held. So, when the session is held at another place in the South, they will also realise that high officers should not always remain in the capital, but that they should also be shifted to other places. Actually, at this juncture, when there is a lot of controversy over the language issue, we will realise that if we go to the South for the session, the people in the South will try to study Hindi. They will be anxious to pick up Hindi words. Hindi people also will realise the difficulties of the people in the South in not knowing Hindi. Therefore, I fully support the resolution of Shri Shastri.

Regarding the expenses, so far as the travelling and other allowances of members are concerned, there will not be any difference. I do not know about Hyderabad, but in Bangalore we have got the beautiful Vidhan Soudha where you can hold the session. There is the legislators' hostel nearby and there are a number of other hostels and good hotels. Therefore, I hope, in spite of the little expenses involved, the Minister will try the experiment by having a short session in Bangalore.

श्री नवल प्रभाकर (दिल्ली-करोल बाग): उपाध्यक्ष महोदय, श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने यह जो संकल्प प्रस्तुत किया है, जब पिछली बार वह यह संकल्प इस सदन में लाये थे तब उस समय मैं ने उस का विरोध किया था किन्तु आज मैं उनके प्रस्ताव का समर्थन करना चाहता हूं। मेरा विचार क्यों बदल गया है वह मैं आप को बतलाना चाहता हूं।

उन के प्रस्ताव का समर्थन करने का कारण यह है कि दिल्ली में संसद् का अधिवेशन चलता है। दिल्ली देश की राजधानी है यह हमारे लिए गौरव की बात है यह मैं मानता हूं। लेकिन जहां तक उस का रजनीतिक स्थान है, राजनीतिक दृष्टि से दिल्ली दिन प्रतिदिन पीछे पिछड़ती जा रही है। दिल्ली की जो समस्यायें हैं वे भुलाई जा रही हैं। उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मैं ने पिछले दिनों कहा था कि यातायात की समस्या यहां की सुलझ नहीं पा रही है। वह दिल्ली जो कभी ढाई लाख की आबादी वाली दिल्ली थी और उसके सामने बहुत समस्याएं भी नहीं थीं लेकिन जब दिल्ली यहां देश की राजधानी बनी और दिल्ली में सैंट्रल असेम्बली आई उस समय जो उस के सामने समस्याएं थीं वह सारी समस्याएं आज और भी बढ़े चढ़े रूप में उस के सामने मौजूद हैं। दिन पर दिन दिल्ली की आबादी बढ़ती ही चली जा रही है और आबादी बढ़ने के साथ साथ उस की समस्याएं भी बढ़ती चली जा रहीं हैं। उन समस्याओं का कोई हल नहीं होता है। दिल्ली के लोगों की बराबर यह मांग रहती है कि उन के लिए उनका वाजिब राजनैतिक हक मिलना चाहिए, उनको उनका वाजिब अधिकार प्राप्त होना चाहिए। उसके साथ ही जहां मैं यह समझता हूं कि नैतिक दृष्टि से, सांस्कृतिक दृष्टि से और

[श्री नवल प्रभाकर]

एकता की दृष्टि से हम यह चाहते हैं कि उत्तर और दक्षिण का मेल हो तो मेरा यह निवेदन है कि अगर बंगलौर के अन्दर एक सैशन होगा तो कम से कम हम यह जान सकेंगे कि बंगलौर में जहां पर पहले असेम्बली बैठती है, वहीं बंगलौर में संसद् भी बैठेगी तो आज दिल्ली को उत्तरदायी शासन न देने के लिए केन्द्रीय सरकार जो यह तर्क उपस्थित करती है कि दिल्ली में चूंकि संसद् बैठती है इसलिए यहां दो असेम्बली नहीं बैठ सकतीं । इसलिए दिल्ली वालों को उत्तरदायी शासन का अधिकार नहीं दिया जा सकता है, उनका वह तर्क ग़लत साबित हो जाएगा । इसलिए बंगलौर जहां कि असेम्बली बैठती है वहीं संसद् का भी अधिवेशन होगा तो सरकार के सामने और सब के सामने यह चीज साबित हो जायेगी कि अगर बंगलौर में दोनों असेम्बलियां बैठ सकती हैं, दोनों सरकारें चल सकती हैं तो दिल्ली में क्यों नहीं चल सकतीं हैं और उस तरह से मैं समझता हूं कि दिल्ली में भी दोनों सरकारें चल सकेंगी । इन शब्दों के साथ मैं श्री प्रकाशवीर शास्त्री के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और मैं यह चाहता हूं कि संसद् का छोटा अधिवेशन बंगलौर में हो लेकिन बजट अधिवेशन यहीं होना चाहिए । संसद् के छोटे अधिवेशन बंगलौर के अन्दर होने चाहिए । हैदराबाद में संसद् के अधिवेशन के पक्ष में मैं नहीं हूं । मैं श्री प्रकाशवीर शास्त्री के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय : श्री सत्य नारायण सिंह :

श्री ओंकार लाल बेरवा (कोटा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं ने इस प्रस्ताव पर बोलने के लिए नाम दिया था लेकिन मुझे नहीं बुलाया । मुझे समय दिया जाय ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह बड़ा महत्वपूर्ण विषय है और चूंकि अभी भी इस पर काफी लोग अपने विचार रखने को उत्सुक हैं इसलिए इस पर एक घंटा बढ़ा दिया जाय ।

17 hrs.

Shri H. N. Mukerjee (Calcutta Central): I am afraid, Sir, I have to oppose this extension of time.

श्री हुकम चन्द कछवाय : माननीय सदस्य को उन का प्रस्ताव मूव करने दिया जाये, जिस पर बहस बाद में हो सकती है । यह बड़े महत्व का प्रश्न है । यह देश की एकता का सवाल है । सारा हाउस यह मांग कर रहा है कि समय बढ़ा दिया जाये ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : आधा घंटा समय बढ़ा दिया जाये ।

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): Sir, I beg to move:

"That the time allotted for this resolution be extended."

Sir, I suggest that we may extend it by 50 minutes.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): Sir, to accommodate both the sections of the House, may I move:

"That the debate on this resolution be adjourned."

It can be carried over to the next day and taken up after 15 days.

Mr. Deputy-Speaker: The time allotted has already been taken up. There can be only one motion and that is for extension of time. I will put it to the vote of the House.

The question is:

"That the time allotted for this resolution be extended."

Lok Sabha divided:

Division No. 8] **AYES** **[17.04 hrs.**

Bade, Shri
Barwa, Shri Onkar Lal
Bhattacharya, Shri Dinen
Brij Raj Singh, Shri
Dass, Shri, C.
Jain, Shri A. P.
Kachhavaiya, Shri Hukam Chand
Kakkar, Shri Gauri Shanker
Lonikar, Shri
More, Shri K. L.
Patnayak, Shri Kishen
Raghunath Singh, Shri
Sharma, Shri D. C.
Shastri, Shri Prakash Vir
Sonavane. Shri
Virbhadra Singh, Shri

NOES

Alva, Shri A. S
Babunath Singh, Shri
Bhagat, Shri B. R.
Bhakt Darshan, Shri
Chakraverti, Shri P. R.
Chanda, Shrimati Jyotsna
Chaturvedi, Shri S. N.
Chaudhry, Shri C. L.
Chavda, Shrimati
Chuni Lal, Shri
Dhuleshwar Meena, Shri
Dighe, Shri
Elayaperumal, Shri
Gandhi, Shri V. B.
Hem Raj, Shri
Khan, Shri Osman Ali
Kishan Veer, Shri
Koki, Shri Liladhar
Kureel, Shri B. N.
Lakshmikanthamma, Shrimati
Lalit Sen, Shri
Mahida, Shri Narendra Singh
Mandal, Shri J.
Matcharaju, Shri
Mathur, Shri Shiv Charan
Mehrotra, Shri Braj Bihari
Mehta, Shri Jashvant
Mirza, Shri Bakar Ali
Misra Dr. U.
Mukerjee, Shri H. N.
Murti, Shri M. S.
Nair, Shri Vasudevan
Nallakoya, Shri
Pandey, Shri Vishwa Nath
Paramasivan, Shri
Prabhakar, Shri Naval
Pratap Singh, Shri
Raja, Shri C. R.
Rajdeo Singh, Shri
Raju, Shri D. B.
Ram Swarup, Shri
Rananjai Singh, Shri
Rane, Shri
Ranga Rao, Shri
Roa, Shri Muthyal
Roy, Shri Bishwanath
Sheo Narain, Shri
Shree Narayan Das, Shri
Shukla, Shri Vidya Charan
Sinhasan Singh, Shri
Subramaniam, Shri C.
Tiwary, Shri R. S.
Tula Ram, Shri
Tyagi, Shri

Mr. Deputy-Speaker: The result of the Division is: Ayes 16, Noes 53.

The motion was negatived.

संचार तथा संसद्-कार्य मन्त्री (श्री सत्य नारायण सिंह) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य, श्री प्रकाश वीर शास्त्री, की भाषा ग्रौर शली इतनी ग्रच्छी होती है कि जब भी वह इस सदन में बोलते हैं, उस की तरफ़ हम लोगों का खिचाव हो जाता है, भले ही जो कुछ बातें वह कहते हैं, हम उस से सहमत हों या न हों । जिस भावना से वह इस बार—ग्रौर पिछली बार भी— यह प्रस्ताव लाए, उस की मैं काफी इज्जत करता हूं । पिछली बार भी जब मुझे इस प्रस्ताव का विरोध करना पड़ा था, तो मैं ने ग्रपनी ग्रौर सरकार की ग्रोर से विचार व्यक्त किये थे । माननीय सदस्य ने कहा कि पिछली बार उन के प्रस्ताव के विरोध में जो कुछ मैं ने कहा था, उसी के जवाब से ग्राज वह ग्रपना व्याख्यान शुरू करेंगे । उन्होंने भी करीब करीब वही युक्तियां दी हैं ग्रौर शायद मेरे लिए भी इस के ग्रलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है कि मैं उन्हीं युक्तियों को दोहराऊं । यह खेल ऐसा चल रहा है कि वही बातें उधर से कही जाती हैं ग्रौर वही जवाब इधर से दिया जाता है ।

सब लोगों को सुनने में ग्रच्छा लगता है कि जरूर दक्षिण में संसद् का ग्रधिवेशन करना चाहिए, क्योंकि वहां जा कर वहां के लोगों से हमारा सम्पर्क होगा । यह भावना बड़ी ग्रच्छी है ग्रौर हम सब उस को समझते हैं, लेकिन उपाध्यक्ष महोदय, कभी कभी भावना में ग्रादमी बह भी जाता है ग्रौर उस वक्त व्यावहारिकता को ग्रपनी दृष्टि से ग्रोझल कर देता है ।

[श्री सत्य नारायण सिंह]

आज से पन्द्रह दिन पहले उन्होंने अपना यह प्रस्ताव पेश किया था और इस बीच में सरकार ने इस पर काफी तौर पर गौर किया है। जिस विचार से माननीय सदस्य यह प्रस्ताव लाए हैं, वह तो ठीक है, लेकिन इस में कठिनाइयां ऐसी हैं, जिन पर हम काबू नहीं पा सकते। यह असम्भव है। 1959 में जब यह चीज आई। उस वक्त से अब दिक्कतें और भी बढ़ गई हैं। अभी यहां मैसूर में करने की आवाज उठाई गई है। आज जो स्पीचिज हुई हैं उन के ट्रेंड को आप देखें आज देश भक्ति जग गई है। लोकल पैट्रियोटिज्म जिस को कहते हैं, उसकी आवज उठी है। एक तरफ से आवाज उठी है कि हैदराबाद में होना चाहिए और दूसरी तरफ से उठी है मैसूर में . . . .

Shri M. R. Krishna: There is no quarrel between these two States.

Shrimati Lakshmikanthamma: We do not quarrel. Let it be either Hyderabad or Bangalore.

श्री सत्य नारायण सिंह : जो कहा गया है उसका मैं जिक्र कर रहा हूं। स्पीचिज को मैंने सुना है, तभी मैं यह कह रहा हूं।

बंगलौर में एक बड़ा भवन है। मैं इस को मानता हूं। जब बन रहा था तब मैं ने देखा था। अब तो नहीं देखा है। शायद इतना ही बड़ा हो या इससे कुछ छोटा या कुछ बड़ा हो। मैं उस में जाना नहीं चाहता हूं। सवाल भवन का ही नहीं है। मुझे शक है कि साढ़े सात सौ के लिए दो भवन होंगे। दो तरफ के भवन हैं या नहीं हैं, इसमें मुझे सन्देह है।

Shrimati Lakshmikanthamma: I request the hon. Minister to visit these places.

Shri M. R. Krishna: By this time, the hon. Minister must have come to know all about it.

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. The hon. Members should have the patience to hear the Minister.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : है।

श्री सत्य नारायण सिंह : मैं इसको मानता हूं। गैलरी वगैरह का इन्तजाम है या नहीं इन सब बातों को आप छोड़ दें। सिर्फ भवन के इंतजाम की ही बात नहीं है। मैं मानता हूं कि हम लोगों के बैठने का इंतजाम वहां हो जायगा . .

श्री ओंकार लाल बेरवा : उनकी रात में बैठक हो सकती है और हमारी दिन में।

श्री सत्य नारायण सिंह : दो तरह के कालेज चलते हैं, एक डे कालैजिज और एक नाइट कालैजिज। नाइट कालैजिज जो काम करते हैं उनके लिए होते हैं और डे दूसरों के लिए। वह अलग बात है। उन सब बातों में मैं जाना नहीं चाहता हूं। उन शब्दों का मैं प्रयोग करना नहीं चाहता हूं जिन का हमारे यशपाल सिंह जी ने किया है। इधर से भी लोगों ने किया है। सर्कस वाली बात में भी मैं जाना नहीं चाहता हूं कि मैं उसका शायद रिंग लीडर बनूं और लोगों को सरकस दिखाता फिरूं। कठिनाइयां जो हैं, उन को आप देखें। बैठने का सवाल है, रहने का सवाल है। सात आठ सौ मेम्बरों की बात को आप छोड़ दें। आप देखें कि कितने हजार आदमियों को जाना पड़ेगा। अगर हम सचमुच पार्लिमैंट का वहां तमाशा नहीं बनाना चाहते हैं, अगर सचमुच काम करना चाहते हैं तो आप देखें कि कितने आदमियों को जाना पड़ेगा। जिस तरह से पार्लिमेंट का काम होता है वैसा करना चाहते हैं

तो बहुत ज्यादा इतज़ाम हमको करना पड़ेगा। सारी आप की राज्य सभा जायगी, सारी लोक सभा जायगी, पार्लिमेंटरी अफेयर्ज़ का डिपार्टमेंट जायगा और गवर्नमेंट के सारे डिपार्टमेंटस से आदमः जायेंगे ।

शिमला का दृष्टान्त मैं देता हूं। शायद इस हाउस में ऐसा कोई मेम्बर नहीं है जो उस ज़माने में उस असैम्बली का सदस्य रहा हो। मैं उस वक्त सैंट्रल असैम्बली का सदस्य हुआ करता था .

डा० मा० श्री० अणे (नागपुर) : मैं था ।

श्री सत्य नारायण सिंह : इन को पता होगा कि क्या क्या हम उस वक्त कहा करते थे । शिमला को यह एक्सोडस होता था, वहां छः महीने के लिए राजधानी चली जाती थी, मार्च का महीना खत्म होते ही अप्रैल में राजधानी वहां चली जाया करती थी, सारी गवर्नमेंट मूव कर जाती थी और सैशन वहां हुआ करता था लेकिन तब गवर्नमेंट बड़ी छोटी हुआ करती थी । उसकी क्या चर्चा करनी है । 125 मैम्बर इस हाउस के और तीस चालीस दूसरे हाउस के हुआ करते थे । छः केवल एग्जैक्टिव काउंसलर हुआ करते थे । आज आप देखें कि 53 मिनिस्टर, डिप्टी मिनिस्टर आदि सब मिला कर हैं । आज एक डिपार्टमैंट उतना ही बड़ा है जितनी बड़ी कि उस वक्त सारी गवर्नमेंट हुआ करती थी । अणे साहब को मैं याद दिलाऊं कि तब अस्सी करोड़ का बजट हुआ करता था और अब दो हजार करोड़ रुपये का बजट है । क्या से क्या हो गया है, पता ही नहीं चलता है । क्या दुनिया तब थी और क्या आज हो गई है । मैंने दोनों दुनियायें देखी हैं, इसलिए मैं मुकाबला कर सकता हूं । अणे साहब समर्थन करेंगे मेरा इस बात में कि जब हम कांग्रेस बैंचिज पर उधर बैठा करते थे तो हमेशा ही शिमला एक्सोडस को कंडेम किया करते थे । किसी भी बजट सशन की स्पीच उठा कर आप देख लीजिये । शिमला की एक्सोडस हमेशा हमारे सामने होती है । सब लोग इसको अपोज़ किया करते थे । कांग्रेस के प्लेटफार्म से भी और ए० आई० सी० सी० के प्लेटफार्म से भी मुझे याद है कई बार शिमला की एक्सोडस का हम लोगों ने काफी विरोध किया है, उस की काफी निन्दा की है । बजट में तो यह एक हैकनीड चीज़ थी । हम कहा करते थे कि क्या कर रहे हो, लाखों करोड़ों रुपया वहां जाने में खर्च करते हो ।

प्रान्तों में इस तरह से राजधानियां मूव किया करती थीं । उत्तर प्रदेश की नैनीताल में जाती थी, बिहार की रांची में और मद्रास की ऊटी में । स्वराज्य के बाद यह सब बन्द हो गया है । हम लोगों का यह विचार था, हमारी यह भावना थी कि इस तरह से फिज़ूलखर्ची नहीं होनी चाहिए ।

आप विलायत की बात लीजिये । यू० के० की मिसाल लीजिये । कई देश मिला कर वह बना था । जब आयरलैण्ड था तो उसका इसके साथ काफी झगड़ा था । आज नार्थ और साउथ का उतना झगड़ा नहीं है जितना उन में था । आयरलैण्ड अलग हो गया । कभी लोगों ने यह नहीं सोचा कि यह सम्पर्क स्थापित हो सकता है, अगर हम सैशन आयरलैंड में भी करें । आज भी कभी स्काटलैंड में सैशन नहीं होता है, वेल्ज़ में नहीं होता है । यू० एस० एस० आर० की हिस्ट्री आप देखिये, यू० एस० ए० को देखिये, कनाडा को देखिये ।

एक भाई ने कहा कि पाकिस्तान में ऐसा होता है । भगवान बचाये पाकिस्तान से । वहां क्या कोई पार्लिमेंट है ? कोई असर ही नहीं है उस का । हर जगह हम घुमाते फिरें क्या ?

टेलीफोन की बात भी कही गई है । यह भी कहा गया है कि मैं मिनिस्टर भी

[श्री सत्यनारायण सिंह]

उसी डिपार्टमेंट का हूं । यह कहा गया है कि टेलीफोन्ज का प्रबन्ध करना बड़ा आसान है । इंस्ट्रूमेंटस तो हमारे पास बहुत हो गये हैं, यह ठीक है । जितनी आज जरूरत है उतने हम इंस्ट्रूमेंटस तो बढ़ा लेते हैं । लेकिन केबल्ज भी बहुत जरूरी हैं, एक्सचेंज सब से जरूरी है । कोई एक्सचेंज इस वक्त नहीं है, मैं ने दरियाफ्त करा लिया है मैसूर या हैदराबाद में जो कोई भी बोझा इस वक्त बरदाश्त कर सके । आप मैम्बर साहिबान ही नहीं हैं, मिनिस्टर भी हैं, जितने डिपार्टमेंटस के लोग हैं, वे भी हैं, उन के लिए भी टेलीफोन चाहियें, एक्सचेंज चाहियें ।

खर्चे की बात भी की गई है । मैम्बरों के जाने आने से कोई फर्क नहीं पड़ता है । इन को तो वही 31 रुपये रोज और पांच सौ रुपये महीने के मिलने हैं । सब से बड़ा खर्चा तब बढ़ेगा जब हजारों कर्मचारी आप के यहां से जायेंगे । उन को टी० ए० देना पड़ेगा, उन को स्पेशल एलाउं देना पड़ेगा । जब भी कोई आदमी अपनी जगह से दूसरी जगह जाता है तो उस को वह देना होता है । हम लोगों ने हिसाब किया है । करोड़ों का मामला यहं हो जाता है । फिर मकान बनाने का या मकानों के इंतजाम की बात भी है । इस विषय पर हम ने बहुत सोच विचार किया है । काफी सोचा है । अगर हो सकता तो जरूर हम इस को करते ।

सम्पर्क की बात भी की जाती है । यह भी अच्छी बात है । लेकिन होता क्या है, इस को भी आप देखें । मुझे याद है पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उत्तर प्रदेश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में सम्पर्क की बात की थी, जो मतभेद था उस को सम्पर्क स्थापित करके मिटाने की बात की थी, कहा था कि अगर सम्पर्क हो जाय तो मामला ठीक हो जाय । मास कांटैक्ट पर उन्हों ने बड़ा जोर दिया था । यह मुस्लिम लीग की बात थी । सरदार ने एक बार इस का विरोध भी किया । सम्पर्क से कहीं उलटी बात न हो जाय, ऐसी आशंका प्रकट की थी । आप देखें कि सम्पर्क एसा स्थापित हुआ कि जो मुस्लिम लीग कहीं भी बिल्कुल मजबूत नहीं थी वह बहुत ज्यादा मजबूत हो गई इस सम्पर्क के सबब से ।

लोग कहते हैं कि एक साथ खायेंगे, इडली खायेंगे । मैं कहता हूं कि असली चीज यह है कि दिल मिलें । महात्मा गांधी ने जब मूवमेंट शरू की थी कि छुआछूत को मिटा दिया जाय । जातपात मिट जायगी अगर छुआछूत खत्म हो जाय । छूआछुत तो मिटा दी गई है लेकिन जातपात की भावना जो कभी उतनी मजबूत नही थी, आज आप जानते हैं कि कितनी मजबूत हो गई है, उस की क्या हालत हो गई है । असली बात यह है कि दिल मिलें ।

जैसी भावना माननीय सदस्य की है, वैसी हमारी भी है । भावनायें सभी माननीय सदस्यों की इस मामले में एक सी हैं । लेकिन दिक्कतें हुई हैं, कठिनाइयां बहुत अधिक हैं और हम को व्यावहारिकता से काम लेना चाहिये ।

एमरजेंसी की बात की जाती है तो उस की नुक्ताचीनी होती है । लोग कहते हैं कि जहां आप पैसे को बचा सकते हैं, बचाते क्यों नहीं हैं । अब अगर इस को मान लिया जाए तो लोग कहेंगे कि सतरह बरस में तो इस चीज का खयाल आप को नहीं आया अब कैसे आ गया है, क्यों करोड़ों रुपया इस में बरबाद किया जा रहा है, बीस करोड़ या पता नहीं कितना रुपया बरबाद किया जा रहा है । मकान बनाये जायेंगे वहां क्योंकि होटलों में इतनी जगह नहीं है कि इन लोगों को आप प्रोवाइड कर सकें ।

यह भी कहा गया है कि फाइलें गायब हो जायेंगी । असुविधा बहुत होगी । काम करने के लिए वहां सब मिनिस्टर्ज को रहना पड़ेगा, वे यहां नहीं आ सकेंगे । हम यहां भी काम करते हैं, चैम्बर में भी करते हैं और दफ्तरों में भी बैठते हैं । वहां जा कर तो बहुत मुश्किल हो जायगी । एक दो के जाने से काम नहीं चल सकता है । सब को जाना होगा । छः महीने के लिए या कुछ समय के लिए कैपिटल बन जायगा जैसा कि शिमला में होता था । रेग्यूलर इस का इंतजाम करना होगा । जैसे पहले होता था कि अप्रैल का महीना खत्म हुआ कि सब गवर्नमेंट चली गई, वैसा ही यहां भी होगा ।

हमारे रघुनाथ सिंह जी ने इतिहास की बात बताई है, एक सिद्धान्त की बात बताई है और कहा है कि दिल्ली में जो भी ठहरा वह चला गया । उन को कहना चाहिए "मुरारे तृतीयः पन्थाः" । जो कुछ उन्होंने कहा क्या वह बनारस के पंडितों से पूछ कर कहा । वहां तो बड़े पंडित रहते हैं । इस तरह के सन्देह वह हमारे दिलों में पैदा न करें । हम खत्म होने वाले नहीं हैं । हम हटने वाले नहीं हैं । हम नींव जमा कर बैठने वाले हैं, हटने वाले नहीं हैं ।

यह जो प्रस्ताव है, इसके ऊपर कोई वोटा वोटी नहीं होनी चाहिए । इस पर हम ने बहुत गम्भीरता से विचार किया है । जब भी उपयुक्त समय आयेगा और हम इस को कर सकेंगे तो जरूर करेंगे ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : उपाध्यक्ष महोदय, संसद-कार्य मंत्री श्री सत्य नारायण सिंह न केवल शारीरिक-दृष्टि से सुन्दर हैं अपितु उन की भाषा में भी सुन्दरता है और जितने वह स्वयं सुरभित हैं उन की भाषा भी उतनी ही सुरभित है लेकिन एक विशेष बात जो श्री सत्य नारायण सिंह की है वह यह है कि उन्होंने अपनी सुरभित भाषा में एक जादू सा कर के 2 घंटे की बहस को दस मिनट में अपने भाषण से समाप्त करना चाहा है । मैं सोचता था कि जिस गम्भीरता के साथ यह प्रस्ताव इस सदन में आया है उसी गम्भीरता से उत्तर देते हुए वह उन लोगों की कठिनाइयों पर भी विचार करेंगे जो हजारों मील की यात्रा कर के यहां आते हैं और अपने निर्वाचन क्षेत्रों के प्रति वे भी अपने दायित्व को अनुभव करना चाहते हैं । मैंने इस बात पर बहुत बड़ा बल दिया था कि जिस प्रकार से यहां संसद के सदस्य शनिवार और रविवार को अपने निर्वाचनक्षेत्रों में चले जाते हैं उसी प्रकार से दक्षिण भारत के संसद सदस्यों को भी यह अवसर मिलना चाहिए .

श्री सत्य नारायण सिंह : ऐयर सर्विस इसीलिए दी है । हवाई यात्रा की रिआयत इसीलिए दी गई है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : चूंकि वे संसद-कार्य मंत्री हैं इसलिए हो सकता है कि उनकी जानकारी मुझ से कुछ अधिक हो लेकिन आपने यह जो विमान यात्रा की सुविधा दी है वह छोटे अधिवशन में एक बार और बड़ अधिवशन में दो बार दी है । उसमें भी अगर किसी व्यक्ति को यहां से बंगलौर पहुंचना हो और बंगलौर से फिर आकर सोमवार को सेशन अटैंड करना हो तो दोनों दिन विमानों में निकलेंगे और वह अपने निर्वाचन क्षेत्र में नहीं जा सकता है . . .

श्री सत्य नारायण सिंह : विमान के समय को अगर उन्होंने देखा होता तो वह इस बात को रिएलाइज करते कि पूरा एक दिन वह रह सकेंगे । शुक्रवार को यहां से चल कर मद्रास पहुंच जायेंगे, शाम को वह पहुंच जायेंगे अपने मैसूर रात में रहेंगे, शनिवार को रह सकते हैं और इतवार को किसी समय चल कर के यहां इतवार की रात तक दिल्ली वापिस पहुंच जायेंगे ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : दूसरी एक विशेष बात जो संसद-कार्य मंत्री कहना चाहते हैं वह यह है कि भारत सरकार बड़ी गम्भीरता से इस बात पर विचार कर रही है कि सरकार के सारे कार्यालय दिल्ली में ही नहीं रहने चाहिएं इस दृष्टि से उसने कुछ अपने कार्यालयों को ग्वालियर भेजा है, कुछ अपने कार्यालय उसने नागपुर भेजे हैं और बंगलोर भेजे हैं । जब सरकार अपने कार्यालयों को दिल्ली से बाहर भेजना चाहती है तो अगर सरकार इस बात का निश्चय कर ले कि संसद का साल में एक अधिवेशन हैदराबाद या बंगलोर में हो और स्थायी रूप से कुछ कार्यालय वहां भी रख दिये जायेंगे तो सरकार का अपना जो वह निश्चय है उसके क्रियान्वित करने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि कुछ लोग जिनके कि स्थायी रूप से कार्यालय वहां होंगे उन को संसद के कार्य में भाग लेने में वहां सुविधा होगी तथा जिनके कार्यालय यहां होंगे उनको संसद के कार्य में भाग लेने में यहां सुविधा होगी ।

श्री सत्य नारायण सिंह ने अपने भाषण में 80 करोड़ और 2000 करोड़ रुपये के आंकड़ों का एक जाल बिछा कर मस्तिष्क में यह डर बैठाने का यत्न किया कि उस समय जब शिमला में अधिवेशन होता था तो भारत सरकार का बजट 80 करोड़ रुपये का बनता था तो क्या श्री सत्य नारायण सिंह यह बतायेंगे कि उस समय रुपये की क़ीमत क्या थी और आज जब 2000 करोड़ रुपये का जब बजट बनता है तो आज रुपये की क्या कीमत रह गई है ? उस समय के 80 करोड़ रुपये और आज के 2000 करोड़ रुपये को अगर तराजू के ऊपर रख कर तोलेंगे तो कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं पायेंगे । लेकिन थोड़ी देर के लिए मैं यह कल्पना करूं कि उसमें 5–10 करोड़ या 2–4 करोड़ रुपये अधिक बढ़ भी जायेंगे तो भी देश की एकता के लिए यह महंगी चीज़ नहीं है । एक बड़ा अधिवेशन नहीं, साल में एक छोटा अधिवेशन अगर दक्षिण भारत में किया जाय तो मेरा अपना अनुमान है कि देश की एकता के सामने यह क़ीमत कोई बहुत महंगी नहीं है । देश की एकता के लिए यह क़ीमत बहुत छोटी है ।

ऐसा करना इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि उन लोगों की भावना को निकट से अध्ययन करने का हमें अवसर मिलेगा और हमारी भावना को निकट से अध्ययन करने का अवसर उन्हें मिलेगा । मैं चाहता हूं जैसा कि उन्होंने अपने भाषण के अन्त में कहा कि हम इस प्रस्ताव पर फिर विचार करेंगे वह इस बात को यों न कह कर यह कह दें कि सिद्धान्ततः गवर्नमेंट इस बात को स्वीकार करती है लेकिन अभी चूंकि आपत्कालीन स्थिति चल रही है इससे तत्काल हम इसको कार्यान्वित नहीं कर सकेंगे, संकटकालीन स्थिति में इसे कार्यान्वित करने में कठिनाई बतलाते तो संभव है मुझे अपने प्रस्ताव को वापस लेने में कोई कठिनाई न होती ।

श्री सत्य नारायण सिंह : आज की बात कीजिये, कल कौन जाने क्या हो ?

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : फिर तो वह श्री रघुनाथ सिंह जी की बात बिलकुल सही ठहरेगी । श्री रघुनाथ सिंह ने कहा था कि दिल्ली का इतिहास बतलाता है कि यह दिल्ली नहीं बल्कि यह "ढीली" रही है । जो भी गवर्नमेंट यहां अतीत में आई है वह इसमें हिलती रही है इसलिए कुछ नहीं कहा जा सकता, संसद-कार्य मंत्री ने ऐसा कह कर श्री रघुनाथ सिंह के विचार की पुष्टि की है मैं यह चाहता हूं कि गवर्नमेंट मेरे इस प्रस्ताव पर विचार करे और इसको पारित किया जाये ।

Mr. Deputy-Speaker: There are two amendments.

Shri Shree Narayan Das: I am not pressing my amendment, No. 1. I would seek leave of the House to withdraw it.

Amendment No. 1 was, by leave withdrawn.

Mr. Deputy-Speaker: I shall now put the amendment moved by Shri Sidheswar Prasad, to the vote of the House.

Amendment No. 2 was put and negatived.

Mr. Deputy-Speaker: Has Shri Prakash Vir Shastri the leave of the House to withdraw his resolution?

Shri Prakash Vir Shastri: No, no. I am not withdrawing it.

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"This House is of opinion that one Session of Parliament be held at Bangalore or Hyderabad every Year".

The motion was negatived.

17.25 hrs.

RESOLUTION *RE*: STRUCTURE OF EDUCATION—*contd.*

Mr. Deputy-Speaker: The House will now take up further discussion of the following Resolution moved by Dr. L. M. Singhvi on the 12th March, 1965;

"This House is of opinion that the pattern and structure of education should be purposefully recast and reorganised with a view to promote greater educational uniformity and the cause of national integration."

Four minutes have been taken. There are 56 minutes left.

Dr. L. M. Singhvi (Jodhpur): The state of education and the plight of teachers in our country weigh very heavily on our national conscience. The long and persistent neglect of education has led, I believe, to a smothering of values and a smothering of our creative impulses. A cynical view of conscience is that it is the fear of being watched, that it is the fear of being found out. Even that fear seems to have been in abeyance all these years of drift and inertia, and remorse for this state of affairs has, at best, consisted in ministerial confessions and admissions, making themselves and the country feel bad, in order, perhaps, to lessen their sense of guilt.

I do not wish to sound unduly self-righteous or sweeping in my comments, but I do feel that the gravest lapses of the Government all these years after independence have been in the twin fields of education and economics, and the cumulative effect of these lapses in the long run fill our hearts with dismal forebodings.

I for one was happy to discern a radical approach in the outlook of our new Education Minister, Shri M. C. Chagla, who is a scholar, a humanist, and a jurist of distinction, and who has, by his forthright realism, at least revived the flickering hope that this Government means to salvage and resuscitate education from the stagnation into which it has fallen. It is a stupendous task and a task of heroic dimensions. It is on the success or failure of this task of Shri Chagla that the very future of our country and its teeming millions hinges.

There is no doubt that education provides the nursery for the growth and flowering of human resources and that investment in education is the most basic and the most far-reaching of all investments. The question that that we must address ourselves today